रिकॉर्ड:-हमारे तीर्थ न्यारे है.... ओम शान्तिः प्रातःक्लास 14-7-67

बच्चो ने यह गीत सुना। बच्चो की नालेज की प्वाईन्टस देखने के लिये कि कहाँ तक है कैसे अर्थ करते है फिर ऐसे-2 गीत निकल कर एक-2 से अर्थ करवाना चाहिये। क्योकि इन गीतों को भी करैक्ट किया जाता है नां। इसका अर्थ बाप ही बैठ समझाते है। बच्चो को सिखाने लिये भी यह काम आता है। जो अच्छे-2 रिकॉर्डस है वो सेन्टर्स मे रख कर फिर उनका अर्थ करवाना चाहिये। बाबा ने समझाया है कि कई ऐसे-2 गीत है अगर फिकरात मे कब बैठे हो तो वो गीत खुशी मे ला देवें। बहुत मदद करेंगे यह बहुत काम की चीज है। गीत सुनने से ही झट स्मृती आ जावेगी। खुशी आ जावेगी। तुम बच्चे जानते हो कि बाबा हम इस धरनी के लक्की स्टार्स है। हमारे यह तीर्थ भक्ति मार्ग वालो से बिलकुल न्यारे है। तुम हो पाण्डव सेना। हर एक ग्रुप का अलग पण्डा होता है। जो कि ले जाते है। उनके पास डायरी रहती है। पूछते है कि किस कुल के हो। हर एक अपने कुल वालो को ही लेंगें। कितने पण्डे लेकर जाते है। अभी तुम रुहानी पण्डे हो। तुम्हारा तो नाम ही है पाण्डव सेना। पाण्डवो की राजधानी नही है। पाण्डव तो पण्डे को कहा जाता है। बाप भी बेहद का पण्डा है। गाईड को भी पण्डा कहेंगें। पण्डे ले जाते है तीर्थों पर। पुजारी लोग जानते है कि यह पण्डे ले जाते है यात्राओं पर। ज्ञान मार्ग मे भी तुम पण्डे बनते हो। इसमे कहीं ले जाने की बात नही है। घर मे बैठे-2 भी तुम रास्ता बताते हो। फिर किसीको बताते हो तो वो पण्डा बन जाता है। एक दो को रास्ता बताना है मनमनाभव। तुम्हारे मे तो बहुत होगें जिन्होने तीर्थ किये होगें। बद्रीनाथ, अमरनाथ मे कैसे जाना होता है। पण्डे लोग भी जानते है। तुम हो रुहानी पण्डे। यह तुम भूलो मत। हम पुरुषोत्तम संगम युगी है। तुम ब्राह्मणो के बुध्दी मे एक ही बात है कि हम मुक्ति धाम के पण्डे है। ऐसे नही कि स्वर्ग के पण्डे कोई अलग है। मुक्ति के अलग है नही। तुमको यह निश्चय है कि हम मुक्ति धाम मे जाकर फिर नई दुनियाँ मे आवेंगें। तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पण्डे हो। पण्डे भी अनेक प्रकार के होते है। कोई-2 तो बैकुण्ठ का रास्ता भी बताते है। वहाँ ही फिर वो यात्रा भी है। वहाँ ही फिर जन्म-जन्म की यात्रा कराते है। तुम तो फर्स्ट क्लास पण्डे हो। सबको पवित्रता का ही रास्ता बताते हो। सबको पवित्र
*** *** ***********
रहना है। दृष्टी ही बदल जाती है। तुमने प्रतिज्ञा की है कि हम सिवाय एकके और कोई को याद नही करेंगें। बाबा हम आपको ही याद करेंगें। आप का बनने से हमारा बेड़ा पार हो जाता है। भविष्य मे तो सुख ही सुख है। बाप हमको सुख के सम्बन्ध मे ले जाते है। अथाह सुख है। यहाँ पर तो दुःख ही दुःख है। यहाँ का सुख भी काग विष्टा समान है। तुम पढते ही हो नई दुनियाँ के लिये। तुम जानते हो कि वापस मुक्ति धाम मे जो जावेंगें हम तो फिर जीवनमुक्ति धाम मे आवेंगें। घर मे तो जरुर जावेंगें नाँ। यहाँ पर आना है वाया शान्तिःधाम। यह है दुःखधाम। यह यात्रा है याद बल की। शान्तिःधाम को भी याद करना होता है। बाप को भी याद करना होता है। और बाप के साथ ईमानदारी भी चाहिये। बाप कहते है कि ऐसे नही कि मै तुम्हारे अन्दर को जानता हूँ। नही। तुम जो ऐक्ट करते हो उस पर बाबा समझाते है पुरुषार्थ करवाते है। बाकी तुम कोई अवगुण वा पाप करते हो तो पूछा जाता है कि कोई पाप तो नही किया है। बाप ने समझाया है कि आखें बहुत धोखा देती है। यह भी बताना चाहिये बाबा आज आखो ने हमको बहुत धोखा दिया है। बाबा हम स्त्री को बहन नही समझते है। यहाँ पर तो डर रहता है। घर मे जाता हूँ तो मेरी बुधी चलायमान हो जाती है। बाबा यह हमारी बहुत भारी भूल है। क्षमा करो। बाबा कहते है कि क्षमा की तो इसमे कोई बात ही नही है। यह तो दुनियाँ मे मनुष्य करते ही है। कोई ने चमाट मारा तो कहाँ कि क्षमा करो तो काम ही खलास। ऐसे माफी मांगने मे देरी थोड़ेही लगती है। बुरा काम कर लो फिर कह दो कि आई एम सारी। ऐसे थोड़ेही चल सकता है। यहाँ पर तो सजा जमा होता है। कोई भी उल्टा सुल्टा काम करते हो तो वो झट जमा हो जाता है। जिसका फिर अच्छा बुरा फल दूसरे जन्म मे मिलता है। क्षमा की बात नही है। जो जैसे करते है वैसे ही

वैसा पाते है। बाबा बार-2 समझाते है। एक तो कहते है कि काम महाशत्रु है। यही तुमको आद मध्य अन्त दुःख देता है। ऐसे नही कहते है कि क्रोध महाशत्रु है। बाप को कहते ही है पतितपावन। पतित विकार मे जाने वालो को ही कहा जाता है। यहाँ बाप समझाते रहते है। यहाँ से फिर बाहर मे जाते है तो इतनी परहेज मे नही रह सकते है। तो फिर ऊँच पद भी पा नही सकेंगे। बाबा समाचार तो सारा सुनते रहते है नाँ। यहाँ तो बहुत अच्छा-2 काम करते है। फिर बाहर मे जाने पर कुछ भी धारना नही रहती है। बाबा पूछते भी है। तुम्हारे माँ-बाप कहाँ सोते है, तुम कहाँ पर सोते हो? बाम्बे मे एक ही छोटे से कमरे मे माँ-बाप बच्चे सभी सोते है तो जरूर बच्चे माँ-बाप जब विकार मे जावेंगे तो बच्चो पर तो बुरा असर पडेगा नाँ। सतयुग मे तो ऐसी बातें ही नही होते है। यह तो अभी भारत का यह हाल है। वहाँ पर तो बडे-2 महलो मे रहते है अथाह सुख होता है। तो बाबा बच्चो से भी सब पूछ लेते है। बाबा को समाचार तो देना है नाँ। कोई तो झूठ भी बोलते है। विचार करना चाहिये कि हम किसके साथ झूठ बोलते है। इनसे तो बिलकुल ही झूठ नही बोलना चाहिये। बाबा तो सच्चा बनाने वाला है। बाकी दुनियाँ मे जो कुछ भी सुनते हो वो सब झूठ बोलने बनाने वाले है। वहाँ झूठ होता ही नही हैं। यहाँ पर फिर सच्च का नामो निशान न ही है। फिक तो रहता है नाँ। बाप कहते है कि यह काँटो का जंगल है। परन्तु अपने को काँटा समझते थोडेई है। बाप कहते है कि काम कटारी चलाना यह सबसे बडा काँटा है। इसको भी कोस खाना कहा जाता है। हर जन्म मे एक दो का कोस करते विकारी बनते आये है। तभी तो बाप को पुकारते है नाँ। पुण्यात्माओं की दुनियाँ मे कोई पुकारते नही है। बाप समझाते है कि जबकि मै आया हूँ तुमको ले जाने लिये सुख धाम मे तो पावन बनना चाहिये नाँ सो ही पावन बनो। भगवान को बुलाते है कि शिव बाबा आपसे तो सुखधेनरे मिलते है। भक्ति मार्ग सभी इनको पुकारते है। बच्चे जानते है कि शिवबाबा सुख घेनेरे देकर गये थे। वो तो है ही सुखधाम। वहाँ पर बिमारियाँ आद होती ही नही है। हास्पिटल जेल आद होती नही है। सतयुग मे दुःख का नाम नही है। त्रेता मे दो कला कम हो जाती है तो थोडा कम होता है तो भी हेवन तो कहा ही जाता है नाँ। बाप कहते है कि तुम बच्चो को अथाह अतिइन्द्रिय सुख रहना चाहिये। पढाने वाले को भी याद करना है। भगवान हमारा टीचर है। टीचर को तो सभी याद करते है नाँ। यहाँ पर रहने वाले बच्चो के लिये तो बहुत सहज है। यहाँ पर कोई बन्धन तो है नही। बिलकुल निरबन्धन है। शुरू मे ही जब भठी बनी थी तो ही निरबन्धन हो गये थे। ओना वाँ फुरना तो अब सिर्फ सर्विस का ही है। सर्विस कैसे बढावे, इस पर बाबा बहुत समझाते रहते है। बाबा के पास आते है तो मास डेढ तक बहुत उमंग मे रहते है। फिर देखो ठण्डे पड जाते है। सेन्टर पर ही नही आते है। अच्छा फिर क्या करना चाहिये। लिख कर भी पूछ सकते हो। क्यो नही आते हो? हम समझते है कि शायद माया ने आप पर वार किया है। याँ किसी के संग मे फसे हो वाँ कोई विकर्म किया है। गिर पडे हो तो भी उठना तो चाहिये ही नाँ। फिर पुरुषार्थ करना चाहिये। दिल से होता है। तुम चिठी लिख सकते हो। बहुतो को लज्जा आती है तो फिर फ्री हो जाती है। यहाँ से भी होकर जाते है। फिर समाचार आता है कि घर मे बैठ गये है। कहते है कि मेरी दिल हट गई है। कोई तो पत्रो मे भी लिखते है कि आपकी ज्ञान तो बहुत अच्छा है परन्तु हम पवित्र नही बन सकते है। इसलिये छोड दिया। मेरे मे इतनी ताकत नही है साफ लिख देते है। विकार देखो कैसे गिरा देते है। यहाँ हाथ भी उठाते है कि हम सूर्यवंशी नरसे नारायण बनेंगें। यह नालेज ही है नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनने की। बाबा कहते है गुड जाने गुड की गोथडी जाने। यह (साकार रथ) बाबा की बेग है नाँ। यह अच्छी तरह से पूछते है। इनके पास समाचार भी आते है। वो शिव बाबा तो कहते है कि मै पढाने आता हूँ। जो पढेंगें लिखेंगें वो होंगें नवाब। बाप कहते है दृष्टी को तो बहुत बदलना है। कदम-2 पर खबरदारी चाहिये। [illegible]

जाती है। तुम जब जकव्यात्रा पर हो पवित्र रहते हो। कोई तो यात्रा पर भी ऐसे शौकीन जाते है जो शराब भी अपने साथ ले जाते है। छुपा कर रख देते है। बड़े-2 आदमी भी ले जाते है। इन बिना रह नही सकते है। अभी वो तीर्थ क्या काम का होगा। लडाई वाले भी बहुत शराब पीते है। शराब पीकर जाकर ऐरोप्लान सहित जाकर गिरते है। लडाईमे शराब बहुत काम मे आता है। शराब पीकर तो जैसे कि बादशाह बन जाते है। एक तरफ दिवाला। एक तरफ शराब पीकर बहुत नशे मे चढ़ जाते है। दिवाला पन ही भूल जाते है। अभी तुमको मिलता है ज्ञानअमृत। बाकी याद की ही है मुख्य बात। जिससे ही तुम 21जन्म लिए ऐवर हैल्दी ऐवर वैल्दी बनते हो। बाबा ने कहा था कि यह भी लिख दो कि 21जन्म लिये ऐवर हैल्दी ऐवर वैल्दीकैसे बन सकते है वो आकर समझो। भारतवासी जानते है बरोबर भारत की बडी आयु थी। स्वर्ग मे कब कोई बिमार नही होते है। स्वर्ग मे देवी देवताओं के 150 की आयु थी। 16 कला सम्पूर्ण... थे। कहते है भला यह कैसे हो सकता है? बोलो वहां पर पांच विकार होते ही नही है। वहां भी अगर यही पांच विकार हो तो राम राज्य किसको कहेंगे। देवताय जब वाम मार्गमे जाते है तो भी चित्रतुमने देखे है। बहुत गन्दे चित्र देते है। फिर बाबा यह वाला कहते है कि हमने जो देखा है वो बताते है। शिव बाबा कहते है कि मै तो सिर्फ नालेज ही देता हूं। बाकी इसने जो देखा है वो यह सुनाते है। वो ज्ञान की बाते यह अपने अनुभव की बाते सुनाते रहते है। दो है नां। यह भी अपना बताते रहते है। हर एक को अपनी लाईफ का पता है। तुम जानते हो आधा कल्प से पाप करते आये हो। वहां फिर कोई पाप नही करेंगे। यहां पावन कोई है नही। सन्यासी भी पैदा तो विकार से होते है नां। और भी बहुत उनसे पाप होते है। गुरु बनकर कहते है कि भगवान सर्वव्यापी है। सबको बेमुख कर देते है तो कितना बडा पाप है। इसलिये ही उनका नाम हरणाकश्यप पड जाता है। सब बाते अभी की ही है। अभी भागवत भी चल रहा है। भगवान बैठ बच्चो को नालेज सुनाते है। वास्तव मे होनी तो चाहिये एक ही गीता काबी शिव बाबा की बायोग्राफी क्या लिखेंगे। यह भी तुम जानते हो कोई भी किताब आद कुछ भी रहेगा ही नही। क्यो कि विनाश सामने खडा है। फिर यह पुरुषार्थ की नालेज भी खत्म हो जावेगी। फिर प्रारब्ध शुरु हो जाती है। जैसे ड्रामा मे जो पार्ट हो जाता है वो रील फिर जाता है। फिर नये सिर शुरु होता है। इतने सब आत्माओं मे अपना-2 ड्रामा का सारा पार्ट नूंधा हुआ है। यह है बेहद का नाटक। तुम कहेंगे हम तुमको बेहदके नाटक की आद मध्य अन्त का राज बताते है। वो है निराकारी दुनियाँ। यह है साकारी दुनियाँ। हम तुमको सारा राज समझाते है कि यह चक्र कैसे फिरता है। जिनको तुम समझावेंगे उनको बहुत मजा आवेगा। ऐसे मत समझो कि कोई सुनता नही है। प्रजा बहुत बननी है। हार्ट फेल सर्विस करते नही होना है। तुम समझाती ही रहो। व्यापारियों के पास ग्राहक तो बहुत आते हैं तो आओ हम तुमको बेहद का सौदा दें। भारत मे देवताओं का राज्य था फिर किधर गया, कैसे 84जन्म लिये आओ तो हम तुमको समझावें। भगवानोवाच्य तुम अपने जन्मो को नही जानते हो। सर्विस बहुत कर सकते हो। जब कि फुरसत मिलती है तो बोलो हम तुमको शिव की हिस्ट्री सुनाते है। सिवाय बाप के कोई समझा नही सके। अभी यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। भविष्य के लिये अब कमाई करो। बाबा कहते है मै होता तो राजाओं को भी जाकर समझाता। तुम भारतवासी हो नां। अभी तो प्रजा बन गये हो। तुम अपने 84जन्मो को नही जानते हो आओ तो हम बतावें। पहले तो तुमपवित्र महाराजा थे फिर अब पतितत बने हो। अब फिर पावन बनने का पुरुषार्थ करो। बाप को याद करो। पांच हजार साल पहले भी कहा था कि बाप को याद करो। हम होता तो ऐसे करता। बाबा समझाते तो रहते है नां कि ऐसे-2 सर्विस करो। तुम्हारे ग्राहक ऐसी-2 बाते सुन कर बहुत खुश होगें। तुमको भी माथा टेकेंगे। शुक्रीयां मानेंगे। व्यापारी लोग तो और भी जास्ती सर्विस कर सकते है। व्यापारी लोग तो धर्माऊ भी निकालते है। तम तो बहुत बडे धर्मात्मा

[illegible]

فرصت ... نمبر ... جیول ... آر ... اجاتسی ... رشنوں

ज्ञान सागर की रही हुई लहरें :— बाप कहते है कि तुम्हारा इस समय का एक-2 सेकेंड भी मोस्ट वैल्युबल है। बहुत मोचरा भी खाकर फिर मानी टुकड़ा खाना वो क्या बड़ी बात है। तुम तो बहुत धनवान बनना चाहते हो नां। भक्ति मार्ग मे तो सोमनाथ का मन्दिर भी यही बनाते है नां। इनके वंशेज को भी धन मिलेगा नां। जिन के पास बहुत धन होगा वो ही बनावेंगें नां। पहले-2 जो पुज्य थे उनको ही पुजारी बन कर पहले-2 बनाना है नां। इतना धन होगा जो सोमनाथ का मन्दिर बनावे तब पुजा करें। यह भी तो हिसाब है नां। तुम कहेंगें कि पीछे जो आवेंगें उनके पास तो धन जास्ती होगा। परन्तु यह ज्ञान ही है कि पुज्य सो पुजारी। तो जरूर वो ही शाहुकार होगें नां। बच्चो को समझाते है कि चार्ट रखो तो फायदा होगा। नोट करते जाओ। और सबको पैगाम भी देते जाओ। कहाँ भी जाओ ट्रेन मे भी जाओ तो थोडा समझा कर यह बेज दे दो। भिखारी तो सभी है नां। बोलो इनको तो करोडों की मिलकियत है। इनका जब भारत मे राज्य था तो विश्व मे भर मे शान्ति थी। अब तुम बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे। ओम।

2:— पुरुषार्थ कर पास विश्व आनर बनना है। इसलिये ही माला भी 108 की
* ******
दिखाते है। फिर 16108 की। लन्दन मे मन्दिरमे बाम्बे मे बहुत बडी माला रखी हुई है। राम-2 करते माला को खैच ते रहते है। अब राम तो वास्तव मे परमात्मा को कहाजाता है। रामनाम की धुन ऐसी लगाते है जैसे कि बाजा बजता हो। फायदा कुछ भी नही। यह तो समझ की बात है। बाप को याद करना है जिससे पाप भस्म हो जावे। इनको ही याद की यात्रा कहा जाता है। तुमको तो खिवैया बागवान मिला है। अब तुम कांटो से फूल बन रहे हो। फिर फूल भी नम्बरवार बनना है। किंग फ्लावर बहुत अच्छा होता है। यह तो है बेहद का स्कूल कोई कम पढते है कोई जास्ती पढते है। यह है आत्मा के लिये खजाना। और टोली फिर है शरीर के लिये। ऐवर हैल्दी बनने लिये है याद। सतयुग मे हैल्थ भी है तो वैल्थ भी है। वहाँ आयु भी बडी होती है। यहाँ पर तो अचानक ही बैठे-2 ही मर जाते है। भारत मे इन देवी देवताओं का राज्य था तो कितना मालामाल था। यही भारत 100%साल्वन्ट था अब 100%इनसाल्वन्ट है। यह खेल है बना बनाया। यह ईश्वरिय मशन है। तुम खुदाई खिजमतगार सच्चे-2 हो। खुदाई खिजमत करते हो पतित को पावन बनाते हो। अपने से पूछते रहो कि कितनो का हम कल्याण करते है।

3:— आत्मायें अन्त मे कैसे ऊपर जाती है वो सब तुम्हारी बुधी मे है। बाप ही समझाते है। फिर कहते
* * * *
है कि मीठे-2 बाबा को याद करो। टीचर को याद करेंगें तो भी बाबा जरूर याद आवेगा। सतगुरू को याद करो तो जो कि तुमको सतयुग मे ले जाने वाला है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाबा याद दिलाते है। बाप को बहुत-2 खुशी से याद करना है। बाबा आप हर 5000 वर्ष बाद आकर मिलते हो। बाबा आप ही हमको पतित से पावन बनाते हो। बाबा आपका कितना शुक्रिया माने। आपको तो हम कब भी नही छोडेंगें। आत्मा कहती है शरीर दवारा। इनकी आत्मा इस शरीर दवारा कहती है बाबा। शिव बाबा का मैं घोडा हूं। वो हमको खिलाते है। यह भी तो शिव बाबा को याद करने की युक्ति है नां। भिन्न-2 प्रकार की युक्तियां बताते रहते है। शिव बाबा को याद करते रहो तो तुम्हारा बहुत कल्याण हो जावेगा। रथ को याद नही करना है। याद शिव बाबा को करना है तब तो कल्याण होगा। इसलिये ही बाबा इस रथ का फोटो आद भी निकालने नही देते है। याद भी बडी वण्डरफुल है। आत्मा कितनी छोटी है। उसमें ही सारा 84जन्मो का पार्ट भरा हुआ है। यही कुदरत है। इतनी छोटी सी आत्मा 84 का पार्ट बजाती ही रहती है। अन्त होती ही नही है। अच्छा बच्चे यह भी जानते है कि शिव बाबा जिनको कि याद करते है कि शिव बाबा आओ मुरली चलाओ। वो अब हमसे विदाई लेते है। ओम

4:— अपनी प्रगति होगी ही याद से प्रदर्शनी ही मे सिर्फ समझाने से नही होगी। बुधी की पवित्रता चाहिये
*** *
म:वा:की: पहले तो जरूर बुधी मे आता है तभी ही कुछ नां कुछ करते है। तो फिर बाबा को समाचार लिखते है। ऐसे-2 होता है तो बाबा [illegible] करेंगें [illegible] कह कर करेंगें
[illegible]